भीष्म साहनी : नई कहानी के मुहावरे का अतिक्रमण

डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ

डी-131, रमेश विहार
अलीगढ़-202001
मो.`9837474113

यह आकस्मिक और अस्वाभाविक नहीं है कि भीष्म साहनी को शुरू में प्रभावित करने वाले लेखकों में प्रेमचंद और सुदर्शन मुख्य हैं। स्पष्ट है कि भीष्म साहनी की मानसिकता प्रारंभ से ही समाजधर्मी और यथार्थपरक रही। वे निश्चय ही प्रेमचंद की परम्परा के कथाकार हैं। लेकिन वे प्रेमचंद को एकदम स्थूल रूप में स्वीकारने और आगे बढ़ाने के कायल नहीं। उन्हीं के शब्दों में ''मक्खी मारने से काम नहीं चलेगा। उनकी सुधार-दृष्टि आज हमारी मदद नहीं कर सकती। समस्याओं के जो समाधान उन्होंने दिए हैं, वे आज संगत नहीं रह गए हैं। आज प्रेमचंद की परम्परा को अधिक वैज्ञानिक और कलात्मक आधार देकर आगे बढ़ाने की जरूरत है।'' ऐसा नहीं है कि प्रेमचंद के विकासक्रम से भीष्म साहनी अवगत नहीं हैं उन्हें ज्ञात है कि आखिरी दौर में प्रेमचंद समाधानों के पक्षधर नहीं रह गए थे। जिन कहानीकारों ने प्रेमचंद को आत्मसात करते हुए उनकी जनधर्मी परंपरा को विकसित किया है, नयापन दिया, उनमें भीष्म साहनी अलग से इसलिए पहचाने जाते हैं कि उनकी कहानियों का मुहावरा प्रयोगधर्मी या चौंकाने वाला न होकर बहुत सहज और आत्मीय है। लगता ही नहीं कि ये कहानियां रची गई हैं, लगता है ये 'घटित' हुई हैं। 'कथ्य', 'भाषा', 'कथन-पद्धति' कहीं भी किसी किस्म की अतिरंजना नहीं। किसी किस्म की बनावट नहीं। धनंजय वर्मा जैसे समीक्षकों का चकित होना स्वाभाविक है कि माहौल की हवा और वक्त के फैशन की जद में आए बगैर आज भी कोई ऐसी सीधी-सादी सहज कहानी कैसे लिख लेता है। दरअसल भीष्म साहनी चरित्र, विचार और अनुभव को 'कहानी' के फ्रेम में कुछ इस तरह मढ़ते हैं कि वह एक स्वतंत्र कलाकृति बन जाती है।

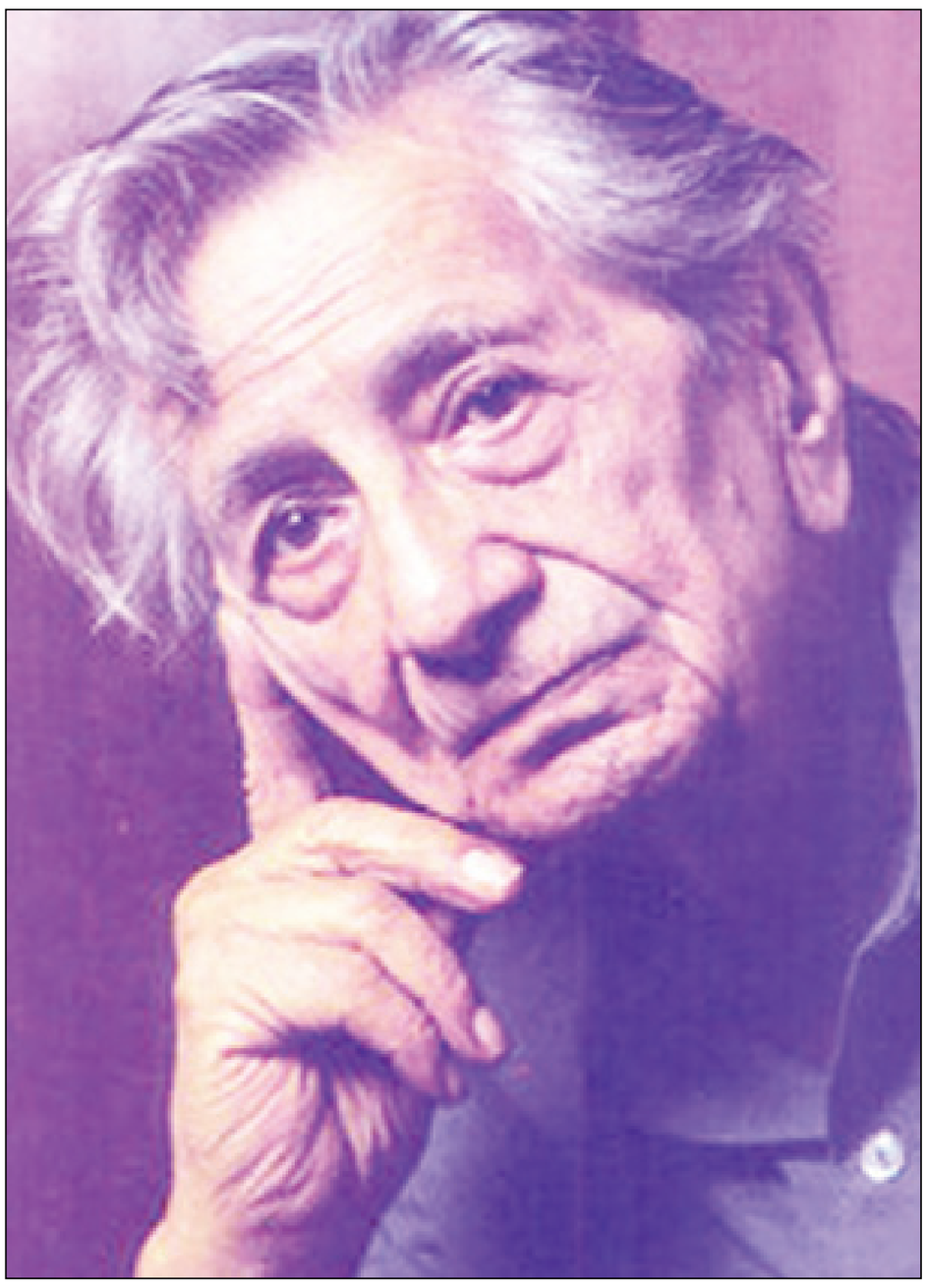

बकौल मधुरेश, सोद्देश्य रचना के विकास की जो सहज दिशाएं होती हैं, उन्हें भीष्म की कहानियों के संदर्भ में आसानी से समझा जा सकता है। 'चीफ की दावत' से लेकर 'खुशबू' तक की कहानी-यात्रा में भीष्म साहनी ने मानवीय संबंधों की पहचान और परिवेश-बोध को आंकने में अपने रचनात्मक सामर्थ्य का पूरा-पूरा उपयोग किया है। एक ओर वे ऐतिहासिक परिदृश्य को अनदेखा नहीं करते, दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में संबंधों और मूल्यों के बिखरने-जुड़ने की वास्तविकता को बहुत निकट से देखने की गवाही देते हैं। संबंधों और मूल्यों की पहचान की दृष्टि से 'चीफ की दावत', 'पटरियां', 'अमृतसर आ गया है', 'ललक', 'रास्ता', 'मालिक का बन्दा', 'ढोलक', 'ओ हरामजादे' आदि कहानियां उल्लेखनीय है। 'चीफ की दावत' की मां 'परम्परा' का द्योतक है, जिसे आधुनिकता के अति उत्साह में 'व्यर्थ' और 'उपेक्षित' समझ लिया जाता है। यह कहानी